Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.07, February, 2024
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

Knowledgeable Research
ISSN 2583-6633
Vol.02, No.07, February,2024
http://knowledgeableresearch.com/

आधुनिक संस्कृत साहित्य में डॉ. नवलता का योगदान

डॉ.अरुण कुमार निषाद
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
मदर टेरेसा महिला महाविद्यालय, कटकाखानपुर, द्वारिकागंज, सुल्तानपुर|
Email: **arun.ugc@gmail.com**

****

संक्षेपिका

आर्ष महाकाव्य से लेकर अद्यावधि –पर्यन्त अविरल रूप से प्रवाहमान संस्कृत काव्यधारा में अनेक कवयित्रियों ने अपने काव्य का प्रणयन किया है, जिसकी विभा से साहित्य जगत विभासित है | इन काव्यों का सर्जन करने वाली कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सहृदय पाठकों को आह्लादित करने, उनको उचितानुचित विवेक ज्ञान से सम्पन्न करने, शोभन चित्रों का विधान कर तदुरूप बनाने का एवं समाज को दिशा-निर्देश देकर, उसकी कुरीतियों का परिहार करने का प्रयास किया है | ऐसे कवयित्रियों में समकालीन कवयित्री 'डॉ. नवलता का भी नाम उल्लेखनीय है |

की वर्ड : अर्वाचीन संस्कृत साहित्य, महिला लेखन, समाज

****

समकालीन संस्कृत-साहित्य को समृद्ध करने वाली संस्कृत कवयित्रियों में डॉ.नवलता का भी उल्लेखनीय स्थान है | आपका जन्म 10 जून सन् 1955 ई. को लखनऊ में हुआ | आपके पिता का नाम श्री शिवशंकर श्रीवास्तव तथा माता का नाम श्रीमती अंजना श्रीवास्तवा है | आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से सन् 1973 ई. में बी.ए., सन् 1975 ई. में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की | आपने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, से सन् 1977 ई. में साहित्य में, सन् 1980 ई. में व्याकरण में आचार्य की उपाधि प्राप्त की | आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से "भारतीय दर्शनों में सम्बन्ध –मीमांसा" विषय पर सन् 1983 ई. में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त किया | अजस्रा, आन्वीक्षिकी, संस्कृतमंजरी, संस्कृतसर्जना, प्राच्यविद्यानुसन्धान, वेदविद्या, गवेषणा, परिशीलनम्, भारतीमन्दार:, गाण्डीवम्, सुसंस्कृतम्, संगमनी इत्यादि संस्कृत की अग्रणी पत्रिकाओं में आपके शोधपत्र निरन्तर प्रकाशित होते रहते हैं | संस्कृत वाङ्मय के विज्ञानपरक विशलेषण में आपकी विशेष रूचि है |

डॉ. नवलता छात्रजीवन से ही सम्भाषण, समस्यापूर्ति, कविता, निबन्ध आदि में अनेक राज्य स्तरीय पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त कर चुकी हैं | आपके तीन ग्रन्थ दिल्ली संस्कृत अकादमी तथा उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा पुरस्कृत हैं | संस्कृत सेवा हेतु आप अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन दिल्ली, आर्य सेवासंघ रसूलपुर, स्वामी भास्करानन्द शोध संस्थान कानपुर, प्रोत्साहन समिति औरैया आदि संस्थाओं द्वारा सम्मानित की गयी हैं | सम्प्रति आप कानपुर विश्वविद्यालय के विक्रमाजीत सिंह सनातनधर्म महाविद्यालय, कानपुर में संस्कृत विभागाध्यक्ष हैं |

रचनायें -

इनकी रचनाएँ हैं-1.प्रत्यूषम् (कवयित्री के द्वारा हस्तलिखित रूप में प्राप्त) 2.संस्कृतसाहित्ये जलविज्ञानम् 3.संस्कृतवाङ्मये कृषिविज्ञानम् 4.मेधामन्थ: 5.जयन्तु कौमॉउनीया: |

Received Date: 10.02.2024
Publication Date: 29.02.20204

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.07, February, 2024
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

कवयित्री डॉ. नवलता के काव्यसंग्रह के अन्तर्गत अनेक विशेषतायें विद्यमान हैं, जिसकी संक्षेप में यहाँ विवेचना की जा रही है -

डॉ. नवलता की भाषा परिष्कृत एवं प्रवाहमयी है, जिसमे प्रसाद एवं माधुर्यगुण से समन्वित सामासिक ललित पदावली का परमाह्लादक प्रयोग पाया जाता है | गद्य की सरल भाषा में वाक्य अतिशय लम्बे दीर्घसमासयुक्त एवं जटिल नहीं हैं | सामान्यतया अल्प समास शैली अथवा समग्रगुणस्वरूपा वैदर्भी रीति का कवयित्री ने अपने काव्य में प्रयोग किया है |

कवयित्री माता सरस्वती की वन्दना करते हुए लिखती हैं-

(क) स्फुटितनादविवर्त विभासिनी

क्षरविकारवती श्रितवैखरी अनिधनाक्षरतत्त्व सनातनं

विदधती जयतां सुरभारती ||1||

सकलशब्द शब्दमयं जगदद्भुतं

वितनुती सकलार्थ वितानकैः |

सुविता जगतः समवायिनी

विजयतां सततं सुरभारती ||2||[1]

(ख) रागवती सन्ध्याऽद्य न जाने

जनयति कथं मनोवैदल्यम् |

वेगवतीमपि सरितं सम्प्रति

शिथिलीकुर्वन्तीवतरंगाः |

इतस्ततोऽम्बरतले डयन्तः

स्वं नीड़ं प्रस्थिता विहंगाः |

अंतर्द्वंदगतं मे चित्तं

धत्ते कथं महच्चाञ्चल्यम् ||[2]

किसी अपरचित व्यक्ति के विषय में जानने की जो स्वाभाविक अभिलाषा होती है उसका वर्णन करते हुए वे लिखती है-

(ग) सुरुचिश्यामलगात्रो

मातः क आगतः |

Received Date: 10.02.2024
Publication Date: 29.02.20204

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.07, February, 2024

An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

कञ्जलोचन: कुञ्चितकेश:

उन्नतभालो वल्कलवेश: |

कस्मिन्देशे जात:

मात: क आगत: ||[3]

(घ) हे कवे ! गायसि युगेभ्य: स्वीयमेव व्यथाप्रगीतम् |

कांक्षसे रचनां नवीनां, यदि, सखे, भव कर्मयोगी ||[4]

डॉ. नवलता के काव्य में अलंकार योजना भी अपने मनोहारी रूप में दर्शन पथ पर आती है | इनके काव्य में अलंकारों का प्रयोग स्थान – स्थान पर स्वाभाविक रूप से हुआ है | शब्दालंकारो में अनुप्रास तथा यमक का अधिक प्रयोग हुआ है | अर्थालंकारों में उपमा, परिकर, दीपक, निदर्शना, अर्थातरन्यास आदि प्रयुक्त हुए हैं |

डॉ. नवलता ने अपने काव्य में संस्कृत लोकगीत भी लिखे हैं | कजरी सावन के महीने में गया जाने वाला लोकगीत है | इसमें विरहिणी नायिका प्रदेश में बसे अपने प्रियतम को उलाहना देती है कि- आप कितने कठोर हृदय वाले हो गये हो, आकाश में काले-काले बादल छा गये हैं | बिजली चमक-चमक कर भयभीत कर रही है, क्या तुमको मेरी याद नहीं आती | कजली (कजरी) का एक उदहारण द्रष्टव्य है –

गर्जति नभसि पयोद:

प्रिय: परदेशं गतो मे ||

श्यामघटा सर्वत्र राजते

तमसाच्छन्नं दिनं भासते |

मनसि भवति मे भीति:

प्रिय: परदेशं गतो मे ||

हरहरायते भीषणवात: |

प्रबलझञ्झया क्रियते घात: |

अहमेका वै गेहे

प्रिय: परदेशं गतो मे ||

Received Date: 10.02.2024
Publication Date: 29.02.20204

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.07, February, 2024
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

तडिदेषा नु दहति मे हृदयम्

जलधारेव वहति में नयनम् |

अत्युष्णो नि:श्वास:

प्रिय: परदेशं गतो मे ||

रिक्ता शय्या दोला रिक्ता |

अनुरक्तापि भवामि विरक्ता |

कोऽपि हरतु सन्देशं

प्रिय: परदेशं गतो मे ||[5]

श्रावण गीत में कवयित्री राधा जी और श्रीकृष्ण जी के परस्पर प्रेम का वर्णन करते हुए लिखती है कि- राधा जी और भगवान श्रीकृष्ण यमुना के किनारे पर और कुञ्जवन में विभिन्न क्रीड़ायें कर रहे हैं |

श्रावणमासे यमुनातीरे

खेलति राधा कुञ्जवने |

इह कदम्बशाखासु लम्बते

शुचिदोलासन्दानम् |

तत्र राजते मुग्धा राधा शुभसुवर्णपटले ||

गौरतनौ शोभते सुरुचिरमं

हरितपीतपरिधानम्

क्वणति नूपुरं रुनझुन –रुनझुन दोलासंचलने ||

दोलापटले राधामभित:

राजन्ते प्रियसख्य:

सर्सर्सर् धूयते दुकूलं प्राचीदिक्पवने ||

दोलायते नन्दगोपालो

Received Date: 10.02.2024
Publication Date: 29.02.20204

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.07, February, 2024
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

मुदा रोचते दोलाम्

क्वचिदायाति च नीचैर्दोला पुनर्याति गगने ||

श्यामघटाच्छादिताश्राम्बरे

नृत्यति वने मयूर:

गोकुलग्रामे भरितोनेव उल्लासो जने जने ||[6]

फागुन के महीने में गाये जाने वाले फगुआ (होलीगीत) में वे लिखती हैं कि- हर तरफ खुशी का वातावरण है | राधा जी श्रीकृष्ण जी तथा अन्य गोप-गोपियाँ एक-दूसरे को रंग-अबीर से रंग रहे हैं |

राजते रंगमयी होली |

शोभते रंगमयी होली ||

व्रजवीथीषु गोपिकाबाला:

करधृतधारायन्त्रगुलाला: |

अञ्जितरागा कृष्णराधिकासंगमयी होली ||1 ||

परिरम्भते पादपो लतिकाम् |

गायन्तीह सहृदया: रसिकाम् |

मदनयश: प्रतनोति शिवप्रियसंगमयी होली ||2||

चुम्बित कलिं रसज्ञो भृंग: |

कण्डूयते प्रियां मातंग: |

गृहोद्यानविपनेषु राजतेऽनंगमयी होली ||3||

हासविलासविनोदितचित्ता-

ननुरंजयति वसन्ते मत्तान् |

ढक्काढोलवेणुमञ्जीरमृदंगमयी होली ||4||

युगपदेव वासन्तीं सुषमाम्

Received Date: 10.02.2024
Publication Date: 29.02.20204

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.07, February, 2024
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

पत्रक्षरावस्थितिं विषमाम

दिशत्यहो लोकाय द्विपथोत्संगमयी होली ||5||

अपनोद्यतां समेषां तोद: |

हृदि-हृदि लसतु केशरामोद: |

लोके भूयो भातु प्रेमतरंगमयी होली ||6||[7]

संस्कृत कवयित्री डॉ. नवलता वर्मा ने अपनी रचनाओं को शास्त्रीय छन्दों से मुक्त रखते हुए गायन के अनुकूल रागानुसारि पदों की स्वच्छन्दता पूर्वक रचना की है | यथा-

(क) नव्या गीति: नव्यारीति:

नव्य: स्वप्नो नव प्रतीति

नवसन्देशो नवनिर्माणम्

न स्याद् भीति: न च संशीति: |

कल्पयेम समवेत्य साम्प्रतं

नव्यं भारतम् ||[8]

(ख) स्वच्छन्दो वन्यखगोऽस्मि सखे

मे स्वर्णपिञ्जरं नो रुचिरम् |

प्रात: प्रबोधयति नित्यमुषा

लालयति करै: स्वयं दिनमान् |

दोलं दोलं सायंपवन:

कुरुतेऽ स्मान् सर्वान् गतश्रवान् |`

रावं रावं निर्झरो मुदा

गायन्ति पार्श्वे गीतं मधुरम ||[9]

Received Date: 10.02.2024
Publication Date: 29.02.20204

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.07, February, 2024
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

डॉ. नवलता सुन्दर प्रभावपूर्ण रस-निष्पत्ति प्रस्तुत करने अत्यन्त सिद्धहस्त हैं | भरत जैसे उत्कृष्ट आचार्यों की रस-विषयक अवधारणा का सम्यक् ध्यान रखते हुए प्रभावपूर्ण आलम्बन –उद्दीपन विभावों को अनुभावों एवं संचारी भावों सहित स्थायीभाव को परिपुष्ट करने का समीचीन प्रयास कवयित्री ने अपने काव्य में किया है |

इनका प्रकृति-चित्रण भी अपने आप में असाधारण है |

मन्दमन्दपावनप्रसूनगन्धसंकुल:

स्पर्शसौख्यदायक: प्रवाति शीतलोऽनिल: ||[10.]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि – डॉ. नवलता की कविता शब्दसौष्ठव, भाषा के माधुर्य तथा छन्दों के नाद सौन्दर्य के कारण अत्यन्त सरस, रोचक एवं मनोहर है | इनका साहित्यिक-सौष्ठव एवं सामयिक महत्त्व स्वत: व्यक्त होता है |

<u>सन्दर्भ-</u>

1.भारती पत्रिका, सम्पादक डॉ. श्रीकृष्ण सेमवाल, प्रकाशन दिल्ली संस्कृत अकादमी, पृष्ठ 15

2.प्रत्यूषम्, मनोवैदल्यम्,पृष्ठ 8

3.प्रत्यूषम्, क: आगत:, पृष्ठ 3

4.आह्वानम्- पारिजातम्- अगस्त 1995ई., पृष्ठ 21

5.प्रत्यूषम् (काव्यसंग्रह), कजरीगीतम्, पृष्ठ 1

6.वही, श्रावणगीतम्, पृष्ठ 4

7.वही, होली, पृष्ठ 9

8.वही, नव्या गीति:, पृष्ठ 10

9. वही, वन्यखग:, पृष्ठ 12

10. वही, शरद्, पृष्ठ 2

डॉ.अरुण कुमार निषाद

Received Date: 10.02.2024
Publication Date: 29.02.20204